DSSSB TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
महाभारत (विदुरनीति) उद्योग पर्व अध्याय 38
1 - 47
PART-03
LIVE
27-08-2024 05:00 PM

विद्याशीलवयोवृद्धान् बुद्धिवृद्धांश्च भारत ।
धनाभिजातवृद्धांश्च नित्यं मूढोऽवमन्यते ॥ ३४॥

भारत ! मूर्ख मनुष्य विद्या, शील, अवस्था, बुद्धि, धन और कुलमें बड़े माननीय पुरुषोंका सदा अनादर किया करता है ॥ ३४॥

अनार्यवृत्तमप्राज्ञमसूयकमधार्मिकम्
अनर्थाः क्षिप्रमायान्ति वाग्दुष्टं क्रोधनं तथा ॥ ३५ ॥

जिसका चरित्र निन्दनीय है, जो मूर्ख, गुणोंमें दोष देखनेवाला, अधार्मिक, बुरे वचन बोलनेवाला और क्रोधी है, उसके ऊपर शीघ्र ही अनर्थ (संकट) टूट पड़ते हैं ॥

अविसंवादनं दानं समयस्याव्यतिक्रमः ।
आवर्तयन्ति भूतानि सम्यक्प्रणिहिता च वाक् ॥ ३६ ॥

ठगी न करना, दान देना, प्रतिज्ञाका उल्लंघन न करना और अच्छी तरह कही हुई बात- ये सब सम्पूर्ण भूतोंको अपना बना लेते हैं ॥ ३६ ॥

अविसंवादको दक्षः कृतज्ञो मतिमानृजुः ।
अपि संक्षीणकोशोऽपि लभते परिवारणम् ॥ ३७॥

किसी को भी धोखा न देनेवाला, चतुर, कृतज्ञ, बुद्धिमान् और कोमल स्वभाववाला राजा खजाना समाप्त हो जानेपर भी सहायकोंको पा जाता है अर्थात् उसे सहायक मिल जाते हैं ॥ ३७ ॥

धृतिः शमो दमः शौचं कारुण्यं वागनिष्ठुरा।
मित्राणां चानभिद्रोहः सप्तैताः समिधः श्रियः ॥ ३८ ॥

धैर्य, मनोनिग्रह, इन्द्रियसंयम, पवित्रता, दया, कोमल वाणी और मित्रसे द्रोह न करना- ये सात बातें लक्ष्मीको बढ़ानेवाली हैं ॥ ३८ ॥

असंविभागी दुष्टात्मा कृतघ्नो निरपत्रपः ।
तादृङ्नराधिपो लोके वर्जनीयो नराधिप ॥ ३९॥

राजन् ! जो अपने आश्रितोंमें धनका ठीक-ठीक बँटवारा नहीं करता तथा जो दुष्ट स्वभाववाला, कृतघ्न और निर्लज्ज : है, ऐसा राजा इस लोकमें त्याग देनेयोग्य है ॥ ३९ ॥

न च रात्रौ सुखं शेते ससर्प इव वेश्मनि।
यः कोपयति निर्दोषं सदोषोऽभ्यन्तरं जनम् ॥ ४० ॥

जो स्वयं दोषी होकर भी निर्दोष आत्मीय व्यक्तिको कुपित करता है, वह सर्पयुक्त घरमें रहनेवाले i मनुष्यकी भाँति रातमें सुखसे नहीं सो सकता ॥ ४० ॥

येषु दुष्टेषु दोषः स्याद् योगक्षेमस्य भारत।
सदा प्रसादनं तेषां देवतानामिवाचरेत् ॥ ४१ ॥

भारत ! जिनके ऊपर दोषारोपण करनेसे योगक्षेममें बाधा आती हो, उन लोगोंको देवताकी भाँति सदा प्रसन्न रखना चाहिये ॥ ४१ ॥

येऽर्थाः स्त्रीषु समायुक्ताः प्रमत्तपतितेषु च।
ये चानार्ये समासक्ताः सर्वे ते संशयं गताः ॥ ४२ ॥

जो धन आदि पदार्थ स्त्री, प्रमादी, पतित और नीच पुरुषोंके हाथमें सौंप दिये जाते हैं, वे संशयमें पड़ जाते हैं ॥ ४२ ॥

यत्र स्त्री यत्र कितवो बालो यत्रानुशासिता ।
मज्जन्ति तेऽवशा राजन् नद्यामश्मप्लवा इव ॥ ४३ ॥

राजन् ! जहाँका शासन स्त्री, जुआरी और बालकके हाथमें होता है, वहाँके लोग नदीमें पत्थरकी नावपर बैठनेवालोंकी भाँति विवश होकर विपत्तिके समुद्रमें डूब जाते हैं ॥ ४३ ॥

प्रयोजनेषु ये सक्ता न विशेषेषु भारत।
तानहं पण्डितान् मन्ये विशेषा हि प्रसङ्गिनः ॥ ४४ ॥

भारत ! जो लोग जितना आवश्यक है, उतने ही काममें लगे रहते हैं, अधिकमें हाथ नहीं डालते, उन्हें मैं पण्डित मानता हूँ; क्योंकि अधिकमें हाथ डालना संघर्षका कारण होता है ॥ ४४॥

यं प्रशंसन्ति कितवा यं प्रशंसन्ति चारणाः ।
यं प्रशंसन्ति बन्धक्यो न स जीवति मानवः ॥ ४५ ॥

(केवल) जुआरी जिसकी प्रशंसा करते हैं, नर्तक जिसकी प्रशंसाका गान करते हैं और वेश्याएँ जिसकी बड़ाई किया करती हैं, वह मनुष्य जीता ही मुर्देके समान है ॥ ४५ ॥

हित्वा तान् परमेष्वासान् पाण्डवानमितौजसः ।
आहितं भारतैश्वर्यं त्वया दुर्योधने महत् ॥ ४६ ॥

भारत ! आपने उन महान् धनुर्धर और अत्यन्त तेजस्वी पाण्डवोंको छोड़कर यह महान् ऐश्वर्यका भार दुर्योधनके ऊपर रख दिया है ॥ ४६ ॥

तं द्रक्ष्यसि परिभ्रष्टं तस्मात् त्वमचिरादिव ।
ऐश्वर्यमदसम्मूढं बलिं लोकत्रयादिव ॥ ४७ ॥

इसलिये आप शीघ्र ही उस ऐश्वर्यमदसे मूढ दुर्योधनको त्रिभुवनके साम्राज्यसे गिरे हुए बलिकी भाँति इस राज्यसे भ्रष्ट होते देखियेगा ॥ ४७ ॥

1. महाभारतस्य मंगलश्लोक कस्य ग्रन्थस्य निर्देशोऽस्ति ?

(a) जयग्रन्थस्य

(b) भारतग्रन्थस्य

(c) महाभारतग्रन्थस्य

(d) विजयग्रन्थस्य

(a): महाभारतस्य मंगलश्लोक 'जयग्रन्थस्य' निर्देशोऽस्ति । महाभारत का मंगलश्लोक 'जयग्रन्थ' में निर्देशित है। महाभारत का मूल रूप जय के नाम से प्रसिद्ध था। 'जयोनामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा।' महाभारत के मंगल श्लोक में भी स्पष्ट उल्लेख है-

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

व्यास ने इसे वैशम्पायन को सुनाया था। इसमें 8800 श्लोक थे। महाभारत का क्रम - जय भारत महाभारत।

द्वितीया अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ। इसमें 24000 श्लोक थे। भारत का प्रवचन वैशम्पायन ने व्यास के आदेश पर जनमेजय के | समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था। अन्तिम अवस्था में एक

2. महाभारते पञ्चमं पर्व वर्तते-

(a) विराटपर्व

(b) अरण्यपर्व

(c) उद्योगपर्व

(d) भीष्मपर्व

Ans: (c) महाभारते पञ्चमं पर्व 'उद्योगपर्व' वर्तते। अर्थात् महाभारत में पञ्चम पर्व उद्योग पर्व है। महाभारत को 'जय' 'भारत' या 'जयसंहिता' के नाम से जाना जाता है। इसमें श्लोकों की संख्या एक लाख (1,00,000) है। जिससे इसको 'शतसाहस्रीसंहिता' भी कहा जाता है। यह पर्वों में विभक्त है, इसमें कुल अट्ठारह पर्व हैं जो क्रमानुसार अग्रलिखित है- (1) आदिपर्व (2) सभापर्व (3) वनपर्व (4) विराट्पर्व (5) उद्योगपर्व (6) भीष्मपर्व (7.) द्रोणपर्व (8) कर्णपर्व (9) शल्यपर्व (10) सौप्तिकपर्व (11) स्त्रीपर्व (12) शान्तिपर्व (13) अनुशासनपर्व (14) आश्वमेधिक पर्व (15) आश्रमवासिक पर्व (16) मौसलपर्व (17) महाप्रस्थानिक पर्व (18) स्वर्गारोहण पर्व अत: विकल्प (c) सही है।

3. रामोपाख्यानं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि विद्यते ?

(a) उद्योगपर्वणि

(b) भीष्मपर्वणि

(c) अनुशासनपर्वणि

(d) वनपर्वणि

: (d) रामोपाख्यानं महाभारतस्य 'वनपर्वणि' विद्यते। अर्थात् रामोपाख्यान महाभारत के वनपर्व में विद्यमान है। वनपर्व की मुख्य घटना नल और राम के आख्यान, सावित्री तथा सत्यवान् की कथा, द्रौपदी चीरहरण, इन्द्र द्वारा कवच कुण्डल दान में लेना, मनोरंजन के विविध आख्यान, पाण्डवों की तीर्थयात्रा आदि है। इसमें 22 उपपर्व एवं 315 अध्याय हैं। उद्योगपर्व में शान्ति के लिए वार्तालाप एवं युद्ध की पूर्वपीठिका की प्रस्तुति है और भीष्मपर्व में भीष्मपितामह के सेनापतित्व में 10 दिनों तक महाभारत युद्ध का वर्णन है और भगवान् कृष्ण द्वारा भगवद्गीता का उपदेश वर्णित है तथा अनुशासनपर्व में भीष्म के स्वर्गारोहण की घटना वर्णित है। अतः विकल्प (d) सही है।

4. महाभारतस्य "भारतार्थप्रकाशिका" टीका वर्तते-

(a) देवबोधकृता

(b) वैशम्पायनकृता

(c) विमलबोधकृता

(d) नारायणसर्वज्ञकृता

Ans: (d) महाभारतस्य "भारतार्थप्रकाशिका" टीका नारायणसर्वज्ञकृता वर्तते। अर्थात् महाभारत की 'भारतार्थप्रकाशिका' टीका नारायणसर्वज्ञ कृत है। महाभारत पर कुल 36 टीकाएँ प्राप्त होती हैं जिनमें मुख्य टीकाएँ निम्नलिखित हैं

(1) देवबोधकृत - ज्ञानदीपिका

(2) वैशम्पायनकृत - मोक्षधाम (3) विमलबोधकृत - विषमश्लोकी

(4) नारायणसर्वज्ञकृत - भारतार्थप्रकाश

(5) नीलकण्ठ चतुर्धर - भारतभावदीप

(6) चतुर्भुजमिश्र - भारतोपाय प्रकाश

(7) आनन्दपूर्ण - जयकौमुदी (8) अर्जुनमिश्र भारत - संग्रहदीपिका

(9) वादिराज - लक्षाभरण अतः विकल्प (d) सही है।

5. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति ?

(a) सभापर्व

(b) भीमपर्व

(c) वनपर्व

(d) शल्यपर्व

6. महाभारते मुख्य रसः कः

(a) वीरः

(b) शान्तः

(c) रौद्रः

(d) वीभत्सः

Ans. (b) : महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत 18 पर्वों में विभक्त संस्कृत साहित्य की अनुपम निधि है। इसमें वीररस, शान्तरस, रौद्र रस, वीभत्स रस, करुण रस, भयानकादि रस पिरोया गया है। लेकिन महाभारत का मुख्य रस "शान्त रस" है।

7. विदुरनीतिः महाभारतस्य .... पर्वणि अस्ति।

(a) उद्योग

(b) सभा

(c) आदि

(d) वन

8. . महाभारते कः नायकः

(a) श्रीकृष्णः

(b) अर्जुनः

(c) दुर्योधनः

(d) युधिष्ठिरः

9. महर्षिः वेदव्यासः कतिभिः वर्षैः महाभारतं कृतवान्।

(a) चतुर्भिः ।

(b) पञ्चभिः।

(c) त्रिभिः।

(d) षड्भिः।

व्याख्या : महर्षिः वेदव्यासः त्रिभिः वर्षैः महाभारतं कृतवान् अर्थात् व्यास जी ने महाभारत की रचना तीन वर्षों में निरन्तर परिश्रम से की थी। जैसा कि महाभारत में कहा है-

त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनो मुनिः।
महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमुत्तमम् ॥

10. 'गीता' महाभारत के किस पर्व में वर्णित है?

(a) भीष्म पर्व

(b) शान्ति पर्व

(c) आदि पर्व

(d) अनुशासन पर्व

11. नलचम्पू की कथावस्तु का आधार है –

(a) शान्ति पर्व

(b) भीष्म पर्व

(c) वन पर्व

(d) सभा पर्व

12. महाभारतस्याष्टादशसु पर्वसु इदं द्वादशतमं भवति-

(a) आनुशासनिक पर्व

(b) सौप्तिकपर्व

(c) शान्तिपर्व

(d) स्त्रीपर्व

13. महाभारते गीता वर्तते

(a) भीष्मपर्वणि

(b) शान्तिपर्वणि

(c) उद्योगपर्वणि

(d) द्रोणपर्वणि

14. शाकुन्तलोपाख्यानम् वर्णितमस्ति-

(a) ब्रह्मपुराणे

(b) पद्मपुराणे

(c) भविष्यपुराणे

(d) वायुपुराणे

15. 'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् इयमुद्घोषणा स्वरचनाविषये कृता-

(a) वाल्मीकिना

(b) श्रीमद्भागवतकृता व्यासेन

(c) महाभारतकृता व्यासेन

(d) श्रीहर्षेण

16. महाभारताश्रितं भासविरचितं नाटकमस्ति –

(a) दूतवाक्यम्
(b) प्रतिमानाटकम्
(c) मध्यमव्यायोगम्
(d) बालभारतम्

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b)
(b) (b) एवं (d)
(c) (a) एवं (c)
(d) (b) एवं

Ans. (c) : महाभारताश्रितं भासविरचितं 'दूतवाक्यम् एवं मध्यमव्यायोगम् नाटकमस्ति। अर्थात् महाभारत आश्रित भास विरचित दूतवाक्य एवं मध्यम व्यायोग नाटक है जबकि प्रतिमा नाटक रामायण आश्रित नाटक ग्रन्थ है। भास के नाटकों को कथा-स्रोत की दृष्टि से चार भागों में बाँटा जा सकता है।

(क) उदयन-कथा-मूलक (1) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्तम्

(ख) महाभारत-मूलक - (3) ऊरुभंग (4) दूतवाक्य (5) पञ्चरात्र (6) बालचरित (7) दूतघटोत्कच (8) कर्णभार (9) मध्यमव्यायोग

(ग) रामायण-मूलक - (10) प्रतिमानाटक (11) अभिषेकनाटक

(घ) कल्पना-मूलक (12) अविमारक (13) चारुदत्त

17. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) द्यूतक्रीडा (i) भीष्मपर्व

(b) गीता-उपदेशः (ii) महाप्रस्थानिकपर्व

(c) अभिमन्यु-वधः (iii) सभापर्व

(d) पाण्डवानां हिमालययात्रा का वर्णन (iv) द्रोणपर्व

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) (i), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(ii)

(b) (a) (iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)

(c) (a) (iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)

(d) (a) (iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)

Ans. (d) : समुचित विकल्प क्रम इस प्रकार है-

महाभारत के पर्व	वर्णन
द्यूतक्रीडा	सभापर्व
गीता उपदेश	भीष्मपर्व
अभिमन्युवध	द्रोणपर्व
पाण्डवों की हिमालय यात्रा का वर्णन	महाप्रस्थानिक पर्व

(ii) भारत

- द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ।
- इसमें 24000 श्लोक थे।
- इसमें उपाख्यानों को सम्मिलित नहीं किया गया था।
- भारत का प्रवचन वैशम्पायन ने व्यास के आदेश पर जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था।

(iii) महाभारत

- अन्तिम अवस्था में एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत ग्रन्थ बना।
- भारत को 'महाभारत' के रूप में परिणत करने का अवसर नैमिषारण्य नामक पवित्र स्थान पर होने वाला यज्ञ था।
- इस यज्ञ को शौनक ऋषि ने अनुष्ठित किया। यह द्वादशवार्षिक सत्र था।
- इसके प्रवक्ता सौति नामक ऋषि थे।
- बारह वर्षों के दीर्घकाल में सौति ने अपने श्रोताओं की जिज्ञासा शान्त की।

- भारतवर्ष का विश्वकोष 'महाभारत' है।
- महत्वाद् भातरतत्वाच्च महाभारतमुच्यते। (1.1.274)
- पूना संस्करण के सम्पादक डॉ. सुक्थनकर के अनुसार इसके उपबृंहण का कार्य मुख्यतः भृगुवंशी ब्राह्मणों ने किया।
- कुलपति शौनक स्वयं भार्गव थे।

- कृष्ण की कथा से अलंकृत करने के लिए इसमें हरिवंश खिलपर्व (परिशिष्ट) के रूप में जोड़ा गया है।
- सौति ने विशालकाय महाभारत को अट्ठारह मुख्य एवं दीर्घकाय पर्वों में विभक्त किया।
- वैशम्पायन के अनुसार इसमें दो सहस्र अध्याय हैं। इसके वर्तमान संस्करण में 1925 अध्याय प्राप्त होते हैं।

महाभारत की विषय वस्तु

आदिपर्व

- 19 उपपर्व, 233 अध्याय, 9000 श्लोक।
- तीसरा पौष्य उपपर्व-गद्यात्मक है। जिसमें जनमेजय के सर्प यज्ञ की पृष्ठभूमि है।
- पैलोम तथा आस्तीक उपपर्व में महाभारत की भूमिका वर्णित है।
- शकुन्तला आख्यान, पुरुवंशी राजाओं का वर्णन इसी पर्व में मिलता है।
- धृतराष्ट्र का अपनी पत्नी गांधारी से 100 पुत्रों की प्राप्ति ।

- पाण्डु की पत्नियों (कुन्ती माद्री) से नियोग द्वारा 5 पुत्रों के जन्म की घटनाएँ।
- कौरवों पाण्डवों की शिक्षा, दीक्षा तथा विवाहादि का वर्णन।

2. सभापर्व

- 10 उपपर्व, 81 अध्याय।
- पाण्डवों की दिग्विजय यात्रा, जरासन्ध वध।
- युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ, शिशुपाल वध।
- द्रौपदी का चीर हरण, द्यूत क्रीड़ा में युधिष्ठिर का हारना।
- 12 वर्ष का वनवास, एक वर्ष का अज्ञातवास।

3 वनपर्व

- 22 उपपर्व, 315 अध्याय ।
- नल और राम के आख्यान प्राप्त होते हैं।
- सावित्री तथा सत्यवान् की कथा।
- दुःशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण।
- इन्द्र द्वारा कवच कुण्डल लेने का वर्णन
- मनोरंजन के विविध आख्यान है।
- पाण्डवों की तीर्थ यात्रा।

4. विराटपर्व

- उपपर्व 72 अध्याय, 2700 श्लोक
- पाण्डव वेश बदलकर मत्सराज विराट के राजप्रसाद में अज्ञातरूप में रहते थे।
- द्रौपदी के प्रति आसक्त कीचक का भीम द्वारा वध।
- विराट की गायों का कौरवों द्वारा हरण कर लेने पर अर्जुन और कौरवों का भीषण युद्ध तथा कौरव पराजित।
- अन्तिम उपपर्व (वैवाहिक पर्व) में विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन पुत्र अभिमन्यु के साथ हुआ।

उद्योगपर्व

- 10 उपपर्व, 196 अध्याय, 7100 श्लोक
- इसका मुख्य वृत्त शान्ति के लिए वार्तालाप एवं युद्ध की पूर्वपीठिका की प्रस्तुति।
- दोनों पक्ष मित्रसंग्रह में सन्नद्ध होते हैं।
- कृष्ण के पास सहायता हेतु अर्जुन और दुर्योधन जाते हैं। दुर्योधन को पूरी सेना, अर्जुन को शस्त्र न धारण करने वाली प्रतिज्ञा के साथ कृष्ण मिले।

- शान्ति प्रस्ताव जो पाण्डव केवल पाँच गाँव लेकर भी सन्तुष्ट रहने की बात करते हैं।
- कृष्ण का भी शान्ति दूत बनना व्यर्थ हो जाता है।
- अम्बोपाख्यान' के रूप में पूर्व कथा सुनाई गयी है।
- काशिराज की पुत्री अम्बा का हरण भीष्म ने किया था।
- दूसरे जन्म में अम्बा द्रुपद के घर में शिखण्डी के रूप में जन्म लेती है।
- शिखण्डी में भीष्म से बदला लेने की भावना।
- महाभारत युद्ध की प्रस्तावना।

भीष्म पर्व

- 5 पर्व, 122 अध्याय, 6100 श्लोक
- भीष्म के सेनापतित्व में 10 दिनों तक महाभारत युद्ध का वर्णन।
- सञ्जय धृतराष्ट्र को समस्त युद्ध वृत्तान्त दिव्य दृष्टि से देखकर बताता है।
- सभापर्व के समान इस पर्व के आरम्भ में भूगोल वर्णन है।
- युद्ध के आरम्भ में कृष्णार्जुन संवाद के रूप में 18 अध्यायों का अंश श्रीमद्भगवद्गीता है।

- युद्ध के तीसरे दिन भीष्म के पराक्रम से विवश होकर कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर भीष्म के वध के लिए उद्यत होते हैं। भीष्म कृष्ण की स्तुति करते हैं।
- शिखण्डी को आगे करके अर्जुन द्वारा भीष्म को बाणों की शय्या पर सुला दिया गया।
- भीष्म को प्राण त्यागने के लिए उत्तरायण की प्रतीक्षा।

द्रोण पर्व

- 8- उपपर्व, 202- अध्याय, 10000 श्लोक द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में कौरवों तथा पाण्डवों के साथ 5 दिनों तक के भीषण तथा अन्यायपूर्ण युद्ध का वर्णन है।
- युद्ध में क्रमशः संशप्तकों, अभिमन्यु, जयद्रथ, घटोत्कच, तथा द्रोणाचार्य का वध होता है।
- अभिमन्यु की मृत्यु पर व्यास युधिष्ठिर के दुःख को कम करने के लिए 16 राजाओं का चरित सुनाते हैं।

- द्रोण का वध छलपूर्वक होने से उनका पुत्र अश्वत्थामा कुपित होकर 'नारायणास्त्र' का प्रयोग करता है।
- द्रोणपर्व के पाठ और श्रवण का फल भी बताया गया है।

कर्णपर्व

- कौरव-सेना का अध्यक्ष कर्ण बनता है जो दो दिनों (16 वें 17वें) तक युद्ध करके मारा जाता है।
- कर्ण के अहम् की तुष्टि के लिए मद्रनरेश शल्य को उसका सारथि बनाया जाता है।
- कर्ण और शल्य का परस्पर रोचक वाग्युद्ध (वाणी युद्ध) होता है।

शल्य पर्व

- 2 उपपर्व (ह्रद पर्व, गदापर्व), 65 अध्याय, 3700 श्लोक
- इसमे महाभारत के अन्तिम दिन (18 वें दिन के युद्ध का वर्णन है।
- शल्य कौरवों का सेनापति बना था।

द्रोणे च निहते कर्णेणें भीष्मे च विनिपातिते।
आशा बलवती राजन् शल्यो जेष्यति पाण्डवान् ।।

- शल्य का वध।
- दुर्योधन का गदा युद्ध और ऊरुभङ्ग इस पर्व की मुख्य घटना है।
- इस पर्व के साथ युद्ध समाप्त हो जाता है।
- शल्य पर्व के आख्यानों में तीर्थों का माहात्म्य वर्णित है।

सौप्तिक पर्व

- 1-उपपर्व (ऐषीक), 18 अध्याय, 810 श्लोक मुख्य कथा पाण्डवों की सोई हुई सेना पर आक्रमण करके द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के मारे जाने की है।
- यह कुकर्म-कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा ने किया था।
- इस समाचार से दुर्योधन की सन्तोष पद मृत्यु होती है। पाण्डव अश्वत्थामा को पकड़ कर उसके सिर की मणि निकाल लेते हैं।

स्त्रीपर्व

- 3-उपपर्व (जलप्रदानिक, स्त्रीविलाप, श्राद्ध) 27 अध्याय, 820 श्लोक
- श्राद्ध उपपर्व में कुन्ती युधिष्ठिर को कर्ण के जन्म का वृत्तान्त सुनाकर उसका भी श्राद्ध करने को कहती हैं।
- इस घटना पर युधिष्ठिर स्त्री जाति को शाप देते हैं कि अब स्त्रियों के मन में रहस्य की कोई बात छिपी नहीं रहेगी। गान्धारी द्वारा कृष्ण के वंश के विनाश का शाप।

शान्ति पर्व

- 3 उपपर्व (राजधर्मानुशासन, आपद्धर्म, मोक्षधर्म)
- 365 अध्याय, 14725 श्लोक
- यह पर्व महाभारत में बाद में जोड़ा हुआ पर्व प्रतीत होता है।
- यह पर्व जय और भारत में नहीं था।
- यह महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है।
- इसमें धार्मिक और दार्शनिक सामग्री सर्वाधिक हैं।
- राजधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, दण्डनीति आपद्धर्म आदि की विवेचना हुई है।

- मोक्षधर्म के अन्तर्गत सृष्टि, जीव, आत्मा, कर्मज्ञान, पुरुषार्थ आदि का प्रतिपादन। इस प्रसंग में पराशरगीता - (अध्याय-290-98) हंसगीता (अध्याय-299) आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।
- यह पर्व अपने आप में स्वतन्त्र पुराण जैसा है।
- शरशय्या पर ही भीष्म के द्वारा युधिष्ठिर आदि को उपदेश दिया गया है।

अनुशासन पर्व

- 2-उपपर्व 168 अध्याय
- 10000 श्लोक मुख्य रूप से धर्मशास्त्रीय उपदेश।
- विषयवस्तु की दृष्टि से शान्तिपर्व के समान।
- प्रथम उपपर्व दान धर्म (166 अध्याय)
- द्वितीय उपपर्व 'भीष्म का स्वर्गारोहण' (2अध्याय)

- ब्राह्मणों की महत्ता तथा उन्हें दान करने का वर्णन जैसा महाभारत में है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं है।
- इस पर्व के 17वें अध्याय में "शिवसहस्रनामस्तोत्र" तथा 149 वें अध्याय में 'विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र' वर्णित है।

आश्वमेधिक पर्व

- 92 अध्याय, 4250 श्लोक
- व्यास के आदेश पर युधिष्ठिर अश्वमेध यज्ञ करते हैं।
- अर्जुन द्वारा 1 वर्ष तक यज्ञाश्व की रक्षा होती है।
- 'अनुगीता' नामक उपपर्व में दर्शनशास्त्र की सामग्री है।
- दक्षिणभारतीय संस्करण में 21 अध्यायों का एक अतिरिक्त उपपर्व-वैष्णव धर्म है।

आश्रमवासिक पर्व

- 3-उपपर्व 39- अध्याय 1100 श्लोक
- मुख्यवस्तु- धृतराष्ट्र के साथ गान्धारी, कुन्ती और विदुर का वन में आश्रम बनाकर निवास करना।
- धृतराष्ट्र के 15 वर्षों तक युधिष्ठिर परामर्श दाता बने रहे। उसके बाद वनवास।

मौसल पर्व

- 304 श्लोक
- युधिष्ठिर के सिंहासनारोहण के 36 वर्ष बाद गांधारी का शाप सत्य होता है।
- यादव वंश के लोग परस्पर युद्ध करके समाप्त हो जाते हैं।
- कृष्ण भी एक व्याध द्वारा भ्रमवश मारे जाते हैं।
- यदुवंश के विनाशक 'मूसल' के कारण ही इस पर्व का नाम मौसल है।

महाप्रस्थानिक पर्व

- 3- अध्याय, 115- श्लोक
- पाण्डवों की हिमालय यात्रा का वर्णन।
- हिमालय में क्रमशः द्रौपदी, सहदेव आदि गिरते जाते हैं और युधिष्ठिर उनके पतन का कारण बतालाते हैं। युधिष्ठिर पार्थिव शरीर से ही स्वर्ग जाते हैं।

स्वर्गारोहण पर्व

- 5- अध्याय 220 श्लोक
- इसमें युधिष्ठिर के स्वर्ग पहुँचने तथा देवदूत के साथ नरक में जाकर अपने अनुजों के करुण क्रन्दन सुनने का वृत्तान्त।
- आश्वासन पाकर दिव्य लोक जाकर कृष्ण अर्जुन आदि से मिलते हैं।
- अन्तिम अध्याय में महाभारत का माहात्म्य तथा उपदेश।
- इसे महाभारत का सार "भारत-सावित्री" कहते हैं।

महाभारत की प्रमुख टीकाएँ

- कुल 36 टीकाएँ प्राप्त होती हैं जिनमें मुख्य टीकाएँ निम्नलिखित हैं।

टीकाकार	टीका
देवबोध	ज्ञानदीपिका
वैशम्पायन	मोक्षधाम
विमलबोध	विषमश्लोकी
नारायणसर्वज्ञ	भारतार्थप्रकाश
चतुर्भुज मिश्र	भारतोपायप्रकाश
आनन्दपूर्ण	जयकौमुदी

अर्जुन मिश्र	भारत संग्रहदीपिका
वादिराज	लक्षाभरण
नीलकण्ठ चतुर्धर	भारतभावदीप

- नलोपाख्यान वनपर्व अध्याय 53 से 79 तक। राजानल दमयन्ती की प्रणय कथा। नैषधीयचरितम् का उपजीव्य ।
- अम्बोपाख्यान- उद्योगपर्व में
- हरिवंश पुराण यादवों की विस्तारपूर्वक कथा इसमें तीन पर्व -

(1) हरिवंशपर्व - श्रीकृष्ण के पूर्वजों का वर्णन ।

(2) विष्णुपर्व - श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन।

(3) भविष्यपर्व - कलियुग के प्रभाव का वर्णन ।

महाभारत में अङ्गीरस

- महाभारत में शान्त रस की प्रधानता है।
- मोक्ष नामक पुरुषार्थ का अङ्गीत्वेन वर्णन है।

कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

➢ गान्धारी किसकी माँ थी	दुर्योधन की
➢ सुभद्रा किसकी बहन थी	कृष्ण की
➢ माद्री किसी माता थी	नकुल एवं सहदेव की।
➢ भीष्मस्य पितृकृतं नाम किम्	देवव्रतः
➢ सैवलोऽस्ति	शकुनिः ।
➢ द्रौणिः अस्ति	अश्वत्थामा।
➢ दासी पुत्रः कः	विदुरः ।

- वैरोचनिः कः बलिः।
- द्रोणाचार्यस्य वधं केन कृतम् धृष्टद्युम्नेन ।
- बृहन्नला .आसीत् । अर्जुनः ।